International Journal of Home Science 2020; 6(3): 129-131

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2020; 6(3): 129-131
© 2020 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 15-06-2020
Accepted: 18-07-2020

डॉ0 ममता कुमारी
तदर्थ व्याख्याता, जे0डी0 विमेन्स कॉलेज, पटना, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 ममता कुमारी
तदर्थ व्याख्याता, जे0डी0 विमेन्स कॉलेज, पटना, बिहार, भारत

महिला मजदूरों की सामान्य जानकारी

डॉ0 ममता कुमारी

DOI: https://doi.org/10.22271/23957476.2020.v6.i3c.1020

प्रस्तावनाः–

वैज्ञानिक शोध के अभ्युदय, उत्तरोत्तर बढ़ते प्रयोग एवं उसके द्वारा सत्यान्वेषण के प्रति सामान्य अभिमति ने केवल विचारोन्मुख तर्क द्वारा अनुभवाश्रित जगत् की घटनाओं को समझने के प्रयास और विधि को निरर्थक निरूपित कर दिया है। वैज्ञानिक शोध के अविष्कार होने तक मनुष्य विचार और तर्क द्वारा ही घटनाओं को समझता और इसको समझाने का प्रयास करता रहा है, परन्तु वैज्ञानिक शोध की पद्धति के विकसित होते ही उसका भ्रम टूट गया और उसे इन वास्तविकता का बोध हो गया कि यदि उसे घटनाओं को समझना है तो उसे एसी विचार और तर्क व्यवस्था को प्राह्य करना होगा जो अनुभवाश्रित शोधजन्ज हो। वस्तुतः अनुभवाश्रित शोध जन्य विचार व्यवस्था से ही नूतन विचार उद्भूत होकर नये–नये अनुभवाश्रित शोधों का माग्र प्रशस्त करते रहते है। अनुभवाश्रित शोध के अन्तर्गत अनुसंधानकर्ता अपने शोध विषय से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन कर उनका प्रक्रियान्वयन करता है और तदोपरान्त उनमें निहित समानताओं, असमानताओं तथा पारस्परिक सम्बंधों को सृजनात्मक कल्पनाशक्ति द्वारा प्राप्त कर उनका विश्लेषण एवं निर्वचन करता है और इस प्रकार अन्ततोगत्वा अपने शोध विषय से जुड़ी वास्तविकताओं को लोगों के सम्मूख प्रस्तुत करता है। इस प्रकार किसी शोध प्रयत्न के अन्तर्गत श्रेणी बढ़कर तथ्यों को तालिकाओं के रूप में प्रस्तुत करते हुए उनका विश्लेषण एवं निर्वचन करना विशेष महत्व का हो जाता है। संदर्भित शोध के अन्तर्गत प्रस्तुत एवं पश्चातर्वी अध्यायों में क्षेत्रीय अध्ययन द्वारा ईंट भट्टा उद्योग में संलग्न श्रमिकों की पारिवारिक तथा कार्यदशा के विविध पहलुओं और उनसे सम्बन्धित समस्याओं से जुड़े तथ्यों का प्रस्तुत किया जाता है।

भारतीय समाज के संदर्भ में यह एक वास्तविकता है कि यहाँ श्रम शक्ति का एक बड़ा हिस्सा असंगठित क्षेत्र के विभिन्न उद्योगों में रोजगाररत होकर न केवल अपने व अपने परिवार के लिये जीविकोपार्जन कर रहा है, अपितु देश के बहुमुखी विकास व समृद्धि को सुनिशचित करने के लिये अमूल्य सार्थक पहल भी कर रहा है। यह सत्य भी है कि श्रम में ही सम्पन्न का मूल अन्तर्निहित होता है।

अतः श्रम चाहे संगठित क्षेत्र में किया जा रहा हो अथवा असंगठित क्षेत्र में, उपयोगिता एवं महत्व की दृष्टि से असमान अथवा पक्षपात की दृष्टि से मूल्यांकित नहीं किया जाना चाहिए। यह एक वास्तविकता है। ऐसी दशा में असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों की और अधिक उपेक्षा कर हम सार्वजनिक हित एवं प्रगति की शीध्र सुनिश्चितता को और अधिक देरी व अनिश्चितता में ही बदल रहे हैं। अतएव आवश्यकता है कि ऐसी प्रवृत्ति को अविलम्ब तिलांजलि दे दी जाय और असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों की जीवन एवं कार्यदशा को स्वस्थ बनाने के लिये सही दिशा में पहल की जाय। इसके लिये जो भी रणनीति अथवा कार्य योजना प्रभाव में लायी उसका अनुभवाश्रित शोध से प्राप्त तथ्यों पर आधारित होना परमावश्यक है।

असंगठीत क्षेत्र में स्थापित उद्योग भिन्न–भिन्न प्रकार के होते हुये श्रमिकों को मुहेया की जाने वाली सुविधा श्रम विधानों की प्रभावकता आदि के आधार पूर्णतः असमान है। यह सम्भव नहीं है कि केवल कुछ उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों का अनुभवाश्रित अध्ययन कर, उनसे प्राप्त होने वाले निष्कर्षों के आधार पर असंगठित क्षेत्र में स्थापित समस्त उद्योगों में लगे श्रमिकों की समस्याओं को सुलझाने के लिये पहले की जाय।

वैसे कुछ विशेष संदर्भो में सामान्य नीति को निर्मित्व क्रियान्वित करने में ऐसे अनुभवाश्रित अध्ययनों से प्राप्त निष्कर्षो की मदद अवश्य की जा सकती है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि असंगठित क्षेत्र में लगे श्रमिकों का अध्ययन उद्योग और क्षेत्र को आधार मानते हुये पृथक–पृथक किया जाय तद्नुसार प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह पहल की जाय कि श्रमिकों की कार्य एवं जीवन दशा सुधारने के लिये

क्या–क्या किया जाना आवश्यक हैं प्रस्तुत शोध के जा रहा है, ताकि इनके आधार पर इन श्रमिकों की समस्याओं को सुलझाने के लिये सार्थक पहल सम्भव हो सके।

अन्तर्गत जिला आरा के ईंट भट्टा उद्योग में कार्यरत श्रमिकों की जीवन एवं कार्य दशा के अनुभवाश्रित अध्ययन से प्राप्त तथ्यों का यहाँ प्रस्तुतीकरण किया

श्रमिको का आयु, लिंग, जाति, धर्म शैक्षणिक स्थिति आदि के आधार पर वर्गीकरण

आयु, लिंग, जाति, धर्म शैक्षणिक स्थिति से सम्बन्धित तथ्यों के विवेचन से जहाँ एक तरफ अध्ययन की इकाईयों के बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त होती है वहीं दूसरी तरफ इन तथों को आवश्कतानुसार स्वतंत्र परिवारों के रूप में प्रयोग कर अध्ययन विषय से सम्बन्धित अन्य कई तथ्यों को विश्लेषण करने में भी मदद मिलती है।

तालिका क्रमांक 5.1: आयु के आधार पर श्रमिकों का वर्गीकरण

क्रमांक	आयु (वर्षों में)	संख्या	प्रतिशत
1.	20–30	188	47.00
2.	30–40	104	26.00
3.	40–50	104	26.00
4.	50 से ऊपर	4	1.00

तालिका क्रमांक 5.1 आयु, के आधार पर श्रमिकों के वर्गीकरण से सम्बन्धित हैं प्रस्तुत अध्ययन ईंट भट्टा उद्योग में कार्यरत श्रमिकों में से 47 प्रतिशत श्रमिक 20–30 वर्ष की आयु समूह से सम्बन्धित है। 26 प्रतिशत श्रमिक 30–40 वर्ष की आयु समूह से और इतने ही प्रतिशत श्रमिका 40–50 वर्ष की आयु समूह से सम्बन्धित हैं। 50 वर्ष उसे ऊपर की आयु से मात्र एक प्रतिशत श्रमिक ही सम्बन्धित है।

श्रमिकों की औसत आयु 33.1 वर्ष पायी गयी है आयु से सम्बन्धित तथ्यों से मुख्य रूप से तीन बातें स्पष्ट होती है – प्रथम, यह कि ईंट भट्टा उद्योग में 20 वर्ष से कम आयु का कोई श्रमिक कार्यरत नहीं है। द्वितीय, यह कि अधिकांश श्रमिक 20–50 वर्ष की आयु से सम्बन्धित हैं और तृतीय, यह कि 50 वर्ष से अधिक आयु के श्रमिकों की संख्या नगण्य है। ईंट भट्टा उद्योग में मिट्टी ढोने, गूंथने, ईंट पकाने, भट्टे अथवा चिमनी के स्थान तक उन्हें ढोने और ईंट पकने के पश्चात् उन्हें निकालने व ढोने व आदि जैसे कार्यों में अधिक शक्तियुक्त श्रम की आवश्यकता पड़ती है। सम्भवता इसीलिये उद्योग में न तो बाल श्रमिक काम करते पाय गये और न ही 50 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति। वैसे केवल कुछ श्रमिकों ने यह स्वीकार किया है कि वे अपने बच्चों को वयस्क होने पर ईंट–भट्टा उद्योग में ही कार्य पर लगा देंगे (तालिका क्रमांक – 6. 15) किसी भी श्रमिक न यह स्वीकार नहीं किया है कि वे अपने काम में बच्चों की भागीदारी करवाते हैं।

तलिका क्रमांक 5.2: लिंग के आधार पर श्रमिकों का वितरण

क्रमांक	लिंग	संख्या	प्रतिशत
1.	पुरूष	296	74.00
2.	महिला	104	26.00
	योग :	400	100.00

लिंग के आधार पर श्रमिकों के वितरण की तालिका के अनुसार 74 प्रतिशत पुरूष श्रमिक पाये गये और 26 प्रतिशत महिला श्रमिक। हालांकि ईंट भट्टा उद्योग में अधिकांश तौर पर पुरूष श्रमिक ही काम करते पाये गये, परन्तु 26 प्रतिशत महिला श्रमिकों का हिस्सा यह दर्शाता है कि इस उद्योग में श्रमिक के रूप में उनकी भी सहभागिता विद्यमान है। ईंट भट्टा उद्योग में चिमनी के अन्तर्गत कोयला झोंकने तथा तैयार ईंट के चिट्टों से ईंट की ढुलाई के कार्यों को छोड़कर शेष सभी कार्यों में महिला श्रमिक पुरूष श्रमिकों के समान सहभागिता ग्रहण करती है। इस प्रकार चिमनी में कोयला झोंकने और चिट्टों से ईंट की ढुलाई का कार्य केवल पुरूष श्रमिक ही करते हैं। महिला श्रमिकों में अधिकांश वे हैं जो आरा के बाहर से आकर यहाँ ईंट भट्टा उद्योग में अपने पतियों या परिवार के सदस्यों के साथ कार्यरत हैं।

तालिका क्रमांक 5.3: शैक्षणिक स्तर के आधार पर श्रमिकों का वितरण

क्रमांक	शिक्षा का स्तर	संख्या	प्रतिशत
1.	निरक्षर	194	48.50
2.	केवल साक्षर	116	29.00
3.	प्राथमिक	74	18.50
4.	माध्यमिक	12	3.00
5.	उच्चतर माध्यमिक	4	1.00
6.	स्नातक	–	–
	योग :	400	100.00

तालिका क्रमांक 5.26 ख: श्रमिकों द्वारा प्रयुक्त मादक पदार्थो

क्रमांक	प्रयुक्त मादक पदार्थ	संख्या	प्रतिशत
1.	शराब	262	94.93
2.	गांजा	8	2.89
3.	भांग	4	1.45
4.	अन्य	2	.73
	योग :	276	100.00

नशीले पदार्थ अनेकों प्रकार के हैं। इनकी विविधता में वृद्धि दिनों–दिन होती जा रही है। वैसे ईंट–भट्ठा उद्योग में कार्यरत श्रमिक परम्परागत रूप में प्रयोग में लाये जाने वाले नशीले पदार्थों के सेवन तक ही सीमित हैं। ये नशीले पदार्थ शराब, गांजा और भांग है। अधिकांश श्रमिक (90.93 प्रतिशत) नशीले पदार्थ के रूप में शराब का ही सेवन करते हैं। गांजा और भांग का सेवन करने वाले श्रमिक क्रमशः केवल 2.89 प्रतिशत और 1.45 प्रतिशत ही है।

ये श्रमिक मादक पदार्थों के सेवन के ऐसे आदी या अभ्यस्त ही हैं कि वे प्रतिदिन नियमित रूप से इनका सेवन करते हों। इनमें से केवल 2.18 प्रतिशत श्रमिक ही ऐसे पाये गये हैं प्रतिदिन नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं। अधिकांश श्रमिक (94.92 प्रतिशत) सप्ताह अथवा 15 दिन में एक बार ही ऐसे पदार्थों का सेवन करते पाये गये हैं हालांकि कोई भी महिला प्रतिदिन नशीले पदार्थों का सेवन करते नहीं पायी गयी हैं, फिर भी सामान्य रूप से महिला श्रमिकों में नशीले पदार्थों के सेन का व्यवहार पुरूष श्रमिकों के नशीले पदार्थों के सेवन सम्बन्धी व्यवहार जैसा ही जाया गया है।

तालिका क्रमांक 5.26–ग: पुरूष तथा महिला श्रमिकों द्वारा मादक पदार्थों के सेवन की आवृत्ति

क्र.	मादक पदार्थों के	पुरूष	श्रमिक	महिला	श्रमिक	योग	
	सेवन की आवृत्ति	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रतिदिन	06	2.88	–	–	6	2.18
2.	साप्ताहिक	181	87.02	55	80.88	236	85.50 94.92
3	पाक्षिक	16	7.69	10	14.70	26	9.42
4.	मह में एक बार	02	.96	02	2.94	04	1.45

5.	यदा–कदा	03	1.45	01	1.48	04	1.45
	योग	208	100.00	68	100.00	276	100.00

तालिका क्रमांक – 5.26–घः श्रमिकों के अतिरिक्त परिवार में अन्य सदस्यों द्वारा मादक पदार्थों का उपयोग

क्रमांक	श्रमिक के अतिरिकत अन्य सदस्य द्वारा मादक पदार्थ का उपयोग	संख्या	प्रतिशत
1	लड़का	–	–
2.	भाई	08	2.89
3.	पत्नी	04	1.45 28.26
4.	पति	66	.23.92
5.	मुखिया के अतिरिक्त कोई नहीं	198	71.74
	योग	276	100.00

तालिका क्रमांक 5.26–घ के तथ्यों से स्पष्ट होता है कि कुछ श्रमिक परिवारों में उनके अन्य सदस्यों द्वारा भी न"ाीले पदार्थों का सेवन किया जाता है। जो श्रमिक नशीले पदार्थों का सेवन करते हैं, उनमें से 28.26 प्रतिशत श्रमिकों के परिवारों में ऐसा पाया गया है। तालिका के तथ्यों से एक तथ्य कम से क यह स्पष्ट होता है कि श्रमिकों के परिवारों में उनके बच्चों में इन पदार्थों के सेवन का प्रभाव नहीं है।

तलिका क्रमांक – 5.26–ङः श्रमिकों को मादक पदार्थों के प्रयोग के रोकने सम्बन्धी जानकारी

क्रमांक	रोकने सम्बन्धी	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	276	100.00
2.	नहीं	–	–
	योग :	276	100.00

तलिका क्रमांक – 5.26–चः मादक पदार्थों के प्रयोग का पारिवारिक सम्बन्धों पर प्रभाव

क्रमांक	रोकने सम्बन्धी	संख्या	प्रतिशत
1	झगड़ा होता है	238	86.24
2.	झगड़ा नहीं होता है	38	13.76
	योग :	276	100.00

श्रमिक नशीले पदार्थों का सेवन करते हो और उनके परिवार के सदस्यों द्वारा टोका–टाकी नहीं की जाती हो, ऐसी बात नहीं है। तालिका क्रमांक 5.26–ड़ के तथ्यों से स्पष्ट है कि ऐसे समस्त श्रमिक परिवारों में परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा नशीले पदार्थों के सेवन का विरोध किया ही जाता है। स्वयं श्रमिकों ने भी यह स्वीकार किया है कि उनकी नशे की आदत से पारिवारिक सम्बन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। 86.24 प्रतिशत परिवारों में यह पाया गया है कि नशीले पदार्थो के सेवन के कारण श्रमिक परिवारों में झगड़ा होता रहता है। वस्तुतः नशीले पदार्थों के सेवन से व्यवहार में विचलन और सामाजिक नियंत्रण में शिथिलता होती ही है। इसी कारण से परिवार में तनाव और झगड़े होते हैं।

क्रमांक	व्यय की मासिक राशि (रूपये में)	संख्या	प्रतिशत
1	50	2	.73
2.	100	18	6.53
3.	200	118	42.75
4.	300	122	44.20
5.	400	16	5.79
	योग	276	100.00

औसत मासिक व्यय – 248 रूपये

तालिका क्रमांक – 5.26 जः मदक पदार्थों पर व्यय हेतु धनराषि न होने पर व्यवहार का स्वरूप

क्रमांक	व्यवहार का स्वरूप	संख्या	प्रतिशत
1	उधार लेते है	212	76.82
2.	कर्ज लेते हैं	26	9.43
3.	गहने आदि गिरवी रखते हैं	8	2.89
4.	धनराशि नहीं होने पर मादक पदार्थों का उपयोग ही नहीं करते हैं	30	10.86
	योग	276	100.00

श्रमिक इस नशीले पदार्थों का सेवन पर अच्छी–राशि व्यय कर दी जाती हैं। इन पदार्थों के सेवन पर होने वाला औसत मासिक व्यय 248 रूपये है, जबकि मासिक आय लगभग 1451 रूपये हैं। अतः यह राशि किसी भी रूप में कम नहीं है। नशीले पदार्थों के सेवन के लिये श्रमिक स्वयं के पास पैसा नहीं होने पर किसी न किसी प्रकार व्यवस्था कर ही लेते हैं। 89.14 प्रतिशत श्रमिकों ने यह स्वीकार किया है कि वे उधार, कर्ज अथवा गहने गिरवी रखकर पैसे का प्रबन्ध कर लेते हैं, ताकि वे नशीले पदार्थों का सेवन कर सकें केवल 10.86 प्रतिशत श्रमिकों ने यह स्वीकार किया है कि वे पैसा न होने की स्थिति में नशीले पदार्थों का सेवन करते ही नहीं हैं।